रिकॉर्ड :– नैन हीन को राह दिखाओ... ॐ पिताश्री 30/9/62

ओम शान्ति। बच्चे याद करते हैं बाप को कि हे अंधों की लाठी! अंधे बुद्धिहीन भी होते हैं। तो बुद्धिहीन और अंधे बाप को पुकारते हैं कि बाबा, हम नैन हीन, बुद्धिहीन बन गए हैं, हमको अपने शान्तिधाम–सुखधाम की राह बताओ; क्योंकि यह है दुखधाम। सतयुग को सुखधाम कहा जाता है और वो है शान्ति धाम। अशरीरी दुनिया। वहाँ आत्माओं को शरीर नहीं है। शरीर यहाँ मिलता है। तो वो है निराकारी दुनिया। वाणी से परे स्थान। यह है टॉकी दुनिया। शरीर मिलने से आवाज़ होता है; क्योंकि आत्मा अलग चीज़, शरीर अलग चीज़ है। आत्मा मन–बुद्धि सहित है। ऐसे नहीं, शरीर मन–बुद्धि सहित है। आत्मा चेतन है। अहम आत्मा का धर्म है शान्त। जब शरीर धारण करते हैं तो कर्म करता हूँ। टॉकी बन जाता हूँ। असल हम शान्तिधाम का रहवासी हूँ। वहाँ से हम आते हैं। पहले2 कौन–सी आत्माएँ आती हैं? देवी–देवता धर्म की। सतयुग में पवित्र देवी–देवताएँ रहते थे। उन्हों की महिमा गाई जाती है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, अहिंसा परमोधर्म। सतयुग में 5 विकार होते नहीं। उनको कहा जाता है सुखधाम, जिसका कोई को पता नहीं है। दुखधाम में मनुष्य पुकारते हैं कि हम अंधे हैं, राह बताओ हे सतगुरु; क्योंकि गाया जाता है सतगुरु तारे। तो ज़रूर और कलियुगी गुरु डुबोते हैं। कहा भी जाता है सतगुरु बिना घोर अंधियारा। गुरु तो अभी ढेर हैं; परन्तु यह है ही कलियुग। सतयुग–त्रेता है दिन, द्वापर–कलियुग है रात। इस भारत में 5000 बरस पहले सुख था। पवित्र गृहस्थ आश्रम था। उसको कहा जाता स्वर्ग अथवा देवताओं की दुनिया। इनको असुरों की दुनिया कहा जाता। यही भारत देवी–देवताओं का परिस्तान था। अभी कब्रिस्तान है। पुराने मकान में रहने दिल नहीं होती है तो फिर नया बनाया जाता है ना। तो अभी यह है पुरानी दुनिया। पुरानी से फिर नई ज़रूर बनेगी। यह है संगमयुग जबकि बाप बच्चों पास आते हैं, आकर रास्ता बताते हैं नई दुनिया सुखधाम का। तो ज़रूर उनको पतित दुनिया, पतित शरीर में आना पड़े। सारी दुनिया पतित है। सतयुग में हैं सभी पावन। वहाँ इतने मनुष्य होते नहीं। ..... झाड़ तो पीछे बढ़ता है ना। मनुष्यों की वृद्धि तो होती है। पुनर्जन्म ज़रूर सभी को लेना पड़े। तो बाप समझाते हैं अभी है घोर अंधियारा। भल ढेर गुरु हैं; परन्तु हैं तो कलियुग ना। गुरुलोग तो होते आए हैं। जन्म–मरण .... में आते रहते हैं। वापिस कोई जा नहीं सकते। बाबा ने समझाया है एक है ज्ञान, दूसरी भक्ति, तीसरा है वैराग। वैराग है सन्यासियों का। घरबार छुड़ाने लिए वैराग दिलाते हैं। पवित्र बनने लिए खुद भी छोड़ते हैं। तो वो हुआ रजोगुणी सन्यास। भारत में पवित्रता तो चाहिए ना। भारत ही सबसे जास्ती पवित्र गृहस्थ आश्रम, प्रवृत्तिमार्ग था। अभी अपवित्र है। अभी इन (अ)पवित्रों को पवित्र कौन बनावें? क्या गंगा बनावेगी? वो तो पानी है। उनको ज्ञान गंगा नहीं कहेंगे। उस सागर को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। ज्ञान का सागर, सुख का सागर..... यह प॰ की महिमा है। तो बाप कहते हैं तुम भक्तिमार्ग में यह महिमा गाते आए हो, तो ज़रूर बेहद के बाप की यह वस्तु है। उनसे वर्सा ज़रूर मिलना है। अब वो वर्सा देने कब आते हैं? जब सभी मनुष्य दुखी होते हैं। बेहद का बाप ज़रूर बेहद का सुख देंगे। वो है वैकुण्ठ नई दुनिया का रचयिता। तो बाप कहते हैं मैंने वर्सा दिया होगा ना! लौकिक बाप से तो तुम जन्म–जन्मांतर अल्प काल का वर्सा लेते आए हो। अभी मैं आया हूँ वैकुण्ठ की बादशाही का वर्सा देने। 21 पी(ढ़ी) गाया जाता है ना। तो 21 कुल का उद्धार कौन करेंगे? सुख देने वाला है एक। गाया भी जाता है तुम मात–पिता... लौकिक बाप के बच्चे ऐसी महिमा नहीं करेंगे। शिव के मंदिर में जाकर कहते हैं तुम मात–पिता... भारतवासी थोड़े ही जानते हैं यह हम किसकी महिमा गाते हैं। बाप कहते हैं यह तुम मुझ निराकार बाप की ही वंदना करते हो। मेरे से अभी तुमको वर्सा मिल रहा है। सतयुग का बेहद का सुख तुम ले रहे हो। अपार सुख है। अभी तुम मेरा हाथ पकड़ो। अवर(और) संग बुद्धि योग तोड़ मेरे संग जोड़ो। मैं गाइड बन

..... ज्ञान और योग सिखलाने। अभी जो पवित्र बनेंगे वो ही पवित्र दुनिया में सुख पावेंगे। सभी का ..... हम पहले पूज्य देवता थे अभी पुजारी बने हैं। आपही पूज्य आपही पुजारी ..... भारत में पूज्य देवताएँ थे वो ही फिर अभी पुजारी है। राज्य करते2 पुनर्जन्म लेते हैं। .....यह सृष्टि का चक्कर अभी बुद्धि में रखना है। अभी हम शूद्र हैं, फिर शूद्र से ब्राह्मण .... बाजोली। हम सो देवता थे, फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बने। देवता वर्ण में हम ..... खाद पड़ गई। हम 84 जन्म देखो कैसे लेते हैं यह चक्कर फिरता .....आकर मिले हैं। जो देवी–देवता धर्म वाले हैं उनके लिए ही गाया जाता है ..... आकर देवताई पार्ट बजाते हो। तो आत्मा प॰ अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिला दलाल। तो ज़रूर प॰ को आना पड़े। शिव जयन्ती मनाते हैं; परन्तु यह मान(ते) न हैं कि शिव कैसे आकर ज्ञान देते हैं। वो निराकार ज्ञान का सागर है तो ज़रूर उनको रथ चाहिए। यह है उनका भाग्यशाली रथ, जिसको ब्रह्मा कहते हैं। उनकी मुखवंशावली ब्राह्मण है। वो है कुख वंशावली ब्राह्मण। तुम हो मुख वंशावली धर्म के बच्चे। परमपिता प॰ आकर बच्चों को धर्म की गोद में लेते हैं। बच्चे भी कहते हैं– बाबा, हम आपके थे, फिर आपने सुख में भेजा, फिर 84 जन्मों का यह चक्कर लगाए फिर अभी आपको पाया है। 5000 बरस बाद फिर से आकर मिले हो। बाप भी कहते, हमने तुमको हीरे जैसा बनाया था। अभी कौड़ी जैसे बन गए हो। भारत अभी कंगाल है। किसने बनाया? माया रावण ने। अभी फिर बाप सो देवता बनाते हैं। आत्मा बोलती है हम आत्मा सो देवता थे। फिर उतरे क्षत्रिय धर्म में। फिर वहाँ पुनर्जन्म लिया। आत्मा ही जन्म–मरण में आती है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। तो आत्मा कहती है, हम फिर पुनर्जन्म लेते2 द्वापर में आई। नीचे गिरते2 आई। अन्त में आकर शूद्र बने हैं। अभी हम कौड़ी जैसा बन गए हैं। तो यह है स्वदर्शन चक्कर। तो हम बाबा के बच्चे थे। उस बाप को याद करना पड़े। इसको कहा जाता है मनमनाभव। अभी हम शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण हैं। यह सुखधाम,शान्तिधाम की राह बताने वाले पण्डे हैं। भक्ति की जाती है भगवान से मिलने लिए। तो भगवान कहते हैं– अभी मैं आकर भक्ति का फल देता हूँ। ज्ञान का सागर, पवित्रता का सागर आए पवित्रता का सागर बनाते हैं। कहा जाता है– सत का संग तारे स्वर्ग और कलियुगी गुरुओं का संग बोरे नर्क। कह देते ईश्वर सर्वव्यापी है। अब गाते हैं नैन हीन को राह बताओ, तो राह बताने वाला और जिनको ब(ता)ते हैं दो हो गए ना! ईश्वर सर्वव्यापी कहें, फिर तो सभी ईश्वर हो जाय, पुकार किसको करे? यह तो काम नहीं। हम आत्मा के रूप में भाई2 हैं। शरीर के रूप में भाई–बहन हैं। स्त्री–पुरुष हैं तो भी भाई–बहन हो ग(ए)। फिर उसमें कोई बहन–भाई क्रिश्चियन धर्म वाले, कोई भाई–बहन बौद्ध धर्म वाले। बाकी सभी एक नहीं हो सकते। न सभी एक ही समय आते हैं। अब हम देवी–देवता सतयुग में थे तो और कोई धर्म न था। हमारे धर्म को 5000 (बर)स हुए। मु(ख्य) हैं ही 4 धर्म। झाड़ और ड्रामा पर अच्छी रीत समझाना है। बाप कहते हैं तुम भारतवासी सो देवी–देवता थे। अभी फिर असुर,कंगाल,ऑर्फन बन पड़े हो; क्योंकि बाप को भूल गए हो। यह कोई भी विद्वान,आचार्य,पण्डित नहीं जानते। इसलिए गीता में श्रीमत भगवत कहते हैं। श्री माना श्रेष्ठ। तो (श्रेष्ठ) ते श्रेष्ठ है परमपिता प॰। फिर सेकण्ड नम्बर में हैं ब्र०वि०शं०, फिर थर्ड में ल०ना०। यह मनुष्य सृष्टि है। (मनुष्य) सृष्टि में 84 जन्म भोगने होते हैं, सूक्ष्मवतन में नहीं। हम 84 जन्म भोगेंगे। फिर जो और धर्म वाले आते हैं वो कम जन्म लेंगे। क्रिश्चियन बौद्धी उनसे कम लेंगे। मैक्सीमम 84 जन्म। मिनिमन हैं एक–दो जन्म। यह हिसाब समझने का है। सृष्टि की(के) आदि–मध्य–अन्त को जानना है। नॉलेजफुल बाप ही यह नॉलेज देते हैं कि तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। दूसरा कोई बताए न सकते। सतयुग में भारत सुखधाम था। वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होता। योग से हम एवरहेल्दी, एवर नीरोगी बन जावेंगे। 21 जन्म कोई बीमारी नहीं होगी। स्वर्ग में हस्पतालें अथवा जज, मैजिस्ट्रेट धर्मराज आदि होते नहीं; क्योंकि वहाँ ..... (मुरली अधूरी है)